मुहम्मद अंतिम नबी
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

محمد ﷺ خاتم النبيين – اللغة الهندية

मुहम्मद अंतिम नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

بسم الله الرحمان الرحيم

मुख्तसर सीरते नबवी

नुबुवत से पहले अरब के हालात

उस समय अरबों के यहां बुत परस्ती का चलन था। दीने फ़ितरत के खिलाफ़ बुत परस्ती के अपनाने की वजह से उस ज़माने को ज़मानए जाहिलियत का नाम दिया गया। वह लोग अल्लाह को छोड़ कर जिन बुतों की पूजा किया करते थे। उनमें मशहूर लात, उज़्ज़ा, मनात और हुबल हैं अलबत्ता अरबों में कुछ लोग ऐसे भी थे जो यहूदियत, नसरानियत या मजूसियत को अपना धर्म मानते थे और बहुत थोड़ी तादाद ऐसे लोगों की भी थी जो इबराहीम अलैहिस्सलाम की मिल्लत अर्थात दीने हनीफ़ के मानने वाले थे

जहां तक आर्थिक जीवन की बात है तो गांव के लोगों का आर्थिक जीवन मुकम्मल तौर पर जानवरों से हासिल होने वाली दौलत पर निर्भर था जिन्हें लोग चराया करते थे और शहर में बसने वाले लोगों का जीवन खेती बाड़ी और तिजारत पर निर्भर था। इस्लाम के आगमन के कुछ दिनों पहले तक मक्का अरब का सबसे बड़ा तिजारती शहर था और कुछ स्थान ऐसे भी थे जैसे मदीना और ताइफ़ जहां निर्माण से संबंधित तहज़ीब भी मौजूद थी अलबत्ता सामाजिक जीवन का बुरा हाल था। जुल्म व अत्याचार, क़त्ल व मारकाट हर ओर फैला हुआ था। इनमें कमज़ोरों को हक़ से महरूम रखा जाता था, बच्चियों को ज़िन्दा गाड़ दिया जाता था, असमतें रौंदी जाती थीं। ताक़तवर

लोग कमज़ोरों का हक़ खा जाया करते थे। वे लोग जितनी चाहे शादियां किया करते थे। बदकारी फैली हुई थी और मामूली मामूली बातों पर क़बीलों और कभी–कभी एक ही क़बीले के लोगों के बीच जंगें छिड़ जाया करती थीं।

इस्लाम के आने से पहले अरब की हालत का यह एक सरसरी जायज़ा है।

इब्ने ज़बीहैन (दो ज़बीहों का बेटा) नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बुजुर्ग अब्दुल मुत्तलिब की अधिक औलाद और मालदारी पर कुरैश गर्व किया करते थे। अब्दुल मुत्तलिब ने नज़्र मानी कि यदि अल्लाह उन्हें दस लड़के प्रदान करेगा तो माबूदों की समीपता हासिल करने के लिए उनमें से एक लड़के को ज़बह कर देंगे। उन्होंने जो सोचा था वही हुआ। उनके दस लड़के पैदा हुए जिनमें एक नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाप अब्दुल्लाह भी थे। अब्दुल मुत्तलिब ने जब नज़्र पूरी करनी चाही तो उन्होंने अपने बेटों के बीच कुर्आ अन्दाज़ी (पर्चियां डाल कर नाम निकालना) की तो उसमें अब्दुल्लाह का नाम आया। उन्होंने अब्दुल्लाह को ज़बह करना चाहा तो लोगों ने इस काम से मना कर दिया ताकि बाद में यह चीज़ सुन्नत न बन जाए।

इसके बाद अब्दुल्लाह और दस ऊंटों के बीच पर्चियां डाली गयीं तो उसमें भी अब्दुल्लाह ही का नाम निकला। फिर ऊंटों की तादाद बढ़ा दी तो उसमें भी उनका ही नाम निकला। इस प्रकार हर बार ऊंटों की तादाद बढ़ाने लगे। हर बार उसमें अब्दुल्लाह ही का नाम आता था। इस तरह

करते करते ऊंटों की तादात सौ हो गयी तो इस बार ऊंट का नाम निकला तो अब्दुल मुत्तलिब ने सौ ऊंटों को ज़बह कर दिया और अपने बेटे अब्दुल्लाह की ओर से इन ऊंटों का फ़िदया दिया।

अब्दुल्लाह अब्दुल मुत्तलिब के सबसे चहेते बेटे थे। खास तौर से फ़िदया देने के बाद। जब अब्दुल्लाह बड़े हुए तो उनके बाप ने बनू ज़ोहरा की एक लड़की आमिना बिन्त वहब को चुना और आपकी उनसे शादी करा दी। आमिना का हमल ठहरा उनके तीन महीने के बाद अब्दुल्लाह तिजारती क़ाफिले के साथ मुल्क शाम चले गए। वापसी में बीमारी का शिकार हो गए तो उन्होंने मदीना में बनू नज्जार से तअल्लुक़ रखने वाले अपने मामूज़ाद भाई के यहां क़याम किया। इसी दौरान वहीं पर उनकी मौत हो गयी और वे दफ़न कर दिए गए।

हमल के महीने पूरे हो गए और आप पीर के दिन पैदा हुए, अलबत्ता आपकी पैदाइश के दिन और महीने की सही बात मालूम नहीं है। एक कथन है कि आप 9 रबीउल अव्वल को पैदा हुए। दूसरा कथन है कि 12 रबीउल अव्वल को पैदा हुए। तीसरा कथन यह है कि रमज़ान के महीने में पैदा हुए और इसके अलावा भी बहुत से कथन हैं। आपकी पैदाइश 571 ईसवीं में हुई, इस साल को आमुल फ़ील के नाम से भी याद किया जाता है।

क़िस्सए फ़ील (हाथियों का क़िस्सा) अबरहा हबशी जो यमन में शाह हबशा नजाशी का नायब था, देखा कि अरब मक्का में मौजूद खाना काबा का हज करते हैं और

उसका सम्मान करते हैं और दूर दूर के इलाक़ों से आकर वहां फ़िदिया पेश करते हैं तो उसने सनआ में एक बहुत बड़ा चर्च बनवाया, ताकि वह अरब के हाजियों का रुख़ उसकी तरफ़ मोड़ सके। इस बात का पता क़बाइल अरब में से एक क़बीला बनू कनाना के किसी आदमी को लगा तो वह रात में वहां गया और उसकी दीवारों को गन्दगियों से खराब कर दिया। अबरहा को जब इस बात का पता चला तो वह भड़क गया और बहुत अधिक नाराज़ हुआ। उसने एक बड़ा लशकर तैयार किया जिसमें 60 हजार सैनिक थे उनके साथ 9 हाथी थे, अबरहा इस लशकर को लेकर खाना काबा को ध्वस्त करने के इरादे से मक्का की ओर चल पड़ा। अपने लिए उसने एक बड़ा हाथी चुना। उसने अपने लशकर को मक्क़ा में दाखिल होने के लिए तैयार किया लेकिन हाथी बैठ गया और आगे नहीं बढ़ा। वे लोग उसका रुख दूसरी ओर करते तो उठ कर चलने लगता और काबा की तरफ़ करते तो बैठ जाता।

इसी हाल में थे कि अल्लाह ने उन पर अबाबील चिड़ियों को भेजा, जो उन पर छोटे–छोटे पत्थर बरसा रही थीं जिनको जहन्नम की आग में तपाया गया था। हर चिड़िया तीन पत्थर लिए हुए थी। एक पत्थर अपनी चोंच में, और चने की तरह दो पत्थरों को अपने पांव में, ये पत्थर जिसको लगते, उसके जिसमानी अंग कटकर गिरने लगते और उसके बाद वह मर जाता था। अतएव वे लोग रास्ते में गिरते पड़ते भाग खड़े हुए। अबरहा को अल्लाह ने एक बीमारी का शिकार बना दिया जिससे उसकी उंगलियां गिर गयीं और वह सनआ तक नहीं पहुंच सका की वह हलाक

हो गया। उस समय कुरैश इस लशकर से डर कर अलग अलग घाटियों में बिखर गये थे और पहाड़ों में जा छुपे थे। जब वह लशकर अज़ाब का शिकार हो गया तो वे सही और ठीक ठाक अपने घरों में वापस लौट आए।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पैदाइश से पचास दिन पहले यह घटना घटित हुई थी।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की रज़ाअत

जब आपकी पैदाइश हुई तो आपके चचा अबू लहब की बान्दी ने आपको दूध पिलाया। इससे पहले उन्होंने आपके चचा हमज़ा बिन अब्दुल मुत्तलिब रजियल्लाहु अन्हु को भी दूध पिलाया था। इस तरह से वे रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रज़ाई भाई हुए। चूंकि अरबों का दस्तूर था कि वे अपने बच्चों को दूध पिलाने के लिए देहाती औरतों को तलाश किया करते थे ताकि उनकी अच्छे ढंग से जिसमानी परवरिश हो सके। इस तरह से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दूसरी दूध पिलाने वाली औरत के पास पहुंच गए। जिस समय आपकी पैदाइश हुई मक्का में बनु साअद की औरतों का एक गिरोह आया ताकि दूध पिलाने के लिए बच्चों को तलाश करे। औरतें घरों में घूमने लगीं। सभी औरतें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की यतीमी और आपकी फ़क़ीरी की वजह से आप से मुंह मोड़ रही थी। जिन औरतों ने आप से मुंह मोड़ा था उनमें हलीमा साअदिया भी थी लेकिन अधिकांष घरों का चक्कर काटने के बावजूद उन्हें खुशहाल खानदान का कोई बच्चा नहीं मिल सका, जिसे अपने साथ ले जा सकें ताकि

उसकी मज़दूरी से तंगदस्ती और फ़क़ीरी को कम कर सकें। जबकि इस साल अकाल भी पड़ा हुआ था।

अतएव वे वापस आमिना के घर पहुंची और यतीम बच्चे और कम मज़दूरी को ही कुबूल कर लिया। हलीमा अपने पति के साथ एक दुबली पतली सुस्त रफ़्तार गधी पर बैठ कर मक्का आयी थीं। वापसी के मौक़े पर जैसे ही रसूल अकरम को अपनी गोद में रखती हैं गधी तेज़ रफ़्तारी के साथ दौड़ने लगती है और तमाम जानवरों को पीछे छोड़ देती है जिसे देखकर रास्ते के साथी और मिलने जुलने वाले हैरत में पड़ जाते हैं। इसी तरह दाई हलीमा बयान करती हैं कि उनकी छाती से बहुत ही कम दूध निकलता था जिसके कारण उनका बच्चा हमेशा भूख की तकलीफ़ से रोया करता था।

लेकिन जैसे ही उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपना दूध पिलाना शुरु किया, दूध का फ़व्वारा बह पड़ा। इसी तरह से हलीमा बनू साअद की ज़मीनों के बंजर व खुश्क होने का जिक्र करती हैं और कहती हैं कि जैसे ही उन्हें उस बच्चे को दूध पिलाने का गौरव हासिल हुआ, बनू साअद की ज़मीनें हरी भरी हो गयीं और जानवर बच्चा देने लगे। पहले की हालत यकायक बदल गयी और फ़क़ीरी व मोहताजी की जगह खुशहाली व आसाइश ने ले ली।

मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दो साल तक हलीमा साअदिया के पास रहे वे आप को अपने यहां और रखने की इच्छुक थी क्योंकि वे बहुत सी विचित्र चीज़ें और

हालतें इस बच्चे की वजह से पेश आते हुए देख रही थीं। दो साल पूरे होने पर हलीमा नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर आपकी मां और दादा की सेवा में हाज़िर हुईं। इससे पहले हलीमा ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत को देखा था जिसने उनके हालात बदल दिए थे। इसी वजह से उन्होंने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दूसरी बार अपने साथ ले जाने के लिए आमिना से आग्रह किया। अतएव आमिना ने उन्हें इसकी इजाज़त दे दी। हलीमा यतीम बच्चे को अपने साथ लिए क़बीला बनू साअद पहुंचीं। वे बड़ी खुश थीं और अपने सौभाग्य पर खुशी महसूस कर रही थीं।

शक़्क़े सदर की घटना मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अभी चार साल के हुए थे। आप एक दिन अपने रज़ाई भाई (हलीमा के बेटे) के साथ खेमों पर खेल रहे थे कि हलीमा का बेटा दौड़ता हुआ आया। उसके चेहरे पर भय की अलामतें नज़र आ रही थीं, उसने अपनी मां से अपने क़ुरैशी भाई को तलाश करने को कहा। हलीमा ने पूरी घटना के बारे में सवाल किया तो उसने बताया : ''मैंने दो लोगों को सफेद कपड़ों में देखा, उन्होंने हमारे क़ुरैशी भाई को हम लोगों के बीच से पकड़ा और लिटाकर उसका सीना चाक किया, इस से पहले कि वे अपनी बात पूरी कर पाते, हलीमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तरफ़ दौड़ीं। उन्होंने देखा कि आप खड़े थे और हरकत नहीं कर रहे थे। आपका चेहरा ज़र्द हो रहा था और रंग उड़ा हुआ था। हलीमा ने आप के साथ पेश आई

घटना के बारे में पूछा तो आपने बताया कि सब कुछ ठीक है और बताया कि आपके पास सफ़ेद कपड़े पहने हुए दो लोग आए और उन्होंने पकड़ कर आप का सीना चाक कर दिया। आपके दिल को निकाला और उसके सियाह धब्बे को निकाल कर फेंक दिया और दिल को ठंडे पानी से धोया और फिर उसे पेट में रख दिया। इसके बाद आपके सीने पर हाथ फेरा, फिर वे लोग चले गए और ग़ायब हो गए

हलीमा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को खेमे में लायीं और दूसरे दिन सुबह सवेरे ही मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर आपकी मां की सेवा में जा पहुंचीं उन्हें उस समय देखकर आमिना को बड़ी हैरत हुई क्योंकि हलीमा बच्चे को अपने पास रखने की इच्छुक थीं। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मां ने इस की वजह मालूम की तो उन्होंने शक़्क़े सदर की पूरी घटना बयान कर दी।

आमिना अपने यतीम बच्चे को लेकर क़बीला बनू नज्जार के अपने भाइयों से मुलाक़ात के लिए मदीना चली गयीं और वहीं कई दिन तक ठहरीं। वापसी की राह में अबवा नामक स्थान पर उनका इन्तिक़ाल हो गया और वहीं दफ़न कर दी गयीं।

6 साल की उम्र में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़िम्मेदारी आपके दादा अब्दुल मुत्तलिब ने संभाली और आपको बड़े प्यार व मुहब्बत से रखा। लेकिन जब आप आठ साल के हुए तो आपके दादा भी वफ़ात कर गए तो उनके बाद चचा अबू तालिब ने अधिक संतान होने और

माल व दौलत की कमी के बावजूद आपकी किफ़ालत की ज़िम्मेदारी संभाली। उन्होंने और उनकी पत्नी ने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ अपने बेटे जैसा सुलूक किया। यही वजह है कि यह यतीम अपने चचा जान से बड़ी हद तक घुल मिल गया था। इसी माहौल में आप की पहली तर्बियत शुरु हुई और सच्चाई और अमानतदारी पर आपका लालन पालन हुआ यहां तक कि ये दोनों खूबियां आपका लक़ब हो गयीं। जब कहा जाता कि ''अमीन आ गए या ''सादिक आ गए तो इससे लोग समझ जाते कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम आ गए। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ बड़े हुए तो अपने जीवन के मामले और खाने कमाने के तअल्लुक़ से स्वयं अपने आप पर भरोसा करने लगे और थोड़े माल के बदले कुरैशियों की बकरियां चराने का काम भी किया।

मुल्क शाम का सफ़र करने वाले एक तिजारती क़ाफिले में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शिर्कत की थी। इसमें खदीजा रजियल्लाहु अन्हाका बहुत ज़्यादा माल लगा हुआ था। खदीजा बहुत ही मालदार विधवा औरत थीं। इस तिजारती क़ाफिले में खदीजा के माल के वकील और दूसरे कामों का ज़िम्मेदार उनका सेवक मैसरा था। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बरकत और इमानदारी की वजह से तिजारत में बहुत अधिक लाभ हुआ। इस तरह का लाभ इससे पहले कभी नहीं हुआ था। खदीजा ने अपने सेवक मैसरा से इतने ज्यादा लाभ के बारे में पूछा तो उसने बताया कि सामान दिखाने और बेचने की ज़िम्मेदारी मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह ने अपने सर ली, जिसे

देखकर बड़ी तादाद में लोग उनके पास आए तो इस तरह से जुल्म के बिना बहुत अधिक लाभ हासिल हुआ।

खदीजा ने अपने सेवक मैसरा की बातों को ध्यान से सुना। वे मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह के बारे मे पहले से कुछ जानती भी थीं लेकिन यह घटना सुन कर उनकी पसन्दीदगी में इज़ाफ़ा हो गया। उसी समय रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से शादी करने की इच्छा उनके दिल में पैदा हुई। उन्होंने अपने एक क़रीबी रिश्तेदार को रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में भेजा ताकि इस बारे में आपकी राय से उन्हें आगाह करें। उस समय नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र 25 साल थी। अतः वह औरत नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुई और उसने खदीजा की तरफ़ से शादी का पैग़ाम रखा, जिसे आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने स्वीकार कर लिया। इस तरह यह शादी हो गयी और इनमें से हरेक दूसरे को पाकर खुश हुए। मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने खदीजा की दौलत की देखभाल की ज़िम्मदारी संभाल ली। आपने इस मैदान में अपनी सूझ बूझ और योग्यता साबित कर दी। इस तरह कई साल गुज़र गए। रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से खदीजा के कई औलाद हुई। लड़कियों में ज़ैनब, रुक़य्या, उम्मे कुलसूम और फ़ातिमा रजियल्लाहु अन्हाथीं और लड़कों में क़ासिम और अब्दुल्लाह थे जो कम उम्र ही में वफ़ात पा गए।

नुबुवत

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जैसे ही चालीस साल की उम्र के क़रीब हुए, आप मक्का के मश्रिक़ में मौजूद पहाड़ की हिरा नामक गुफ़ा के अन्दर एकान्त में अकेले रहने लगे। आप कई दिन और कई रातें उसी गुफ़ा में गुज़ारते और अल्लाह की इबादत करते। इक्कीसवीं रमज़ान को आप गुफ़ा ही में थे जबकि आपकी उम्र चालीस साल थी आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाज़िर हुए और आप से कहा ''पढ़िए आपने कहाः ''मैं पढ़ना नहीं जानता। जिबरईल अलैहिस्सलाम ने यही बात दूसरी और तीसरी बार कही। तीसरी बार उन्होंने कहाः पढ़िए...

اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ (١) خَلَقَ الإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ (٢) اقْرَأْ وَرَبُّكَ الأَكْرَمُ (٣) الَّذِي عَلَّمَ بِالقَلَمِ (٤) عَلَّمَ الإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ (٥) ﴾. [العلق].

इक़्रा बिस्मि रब्बिकल्लज़ी खलक़, खलक़ल इन्सान मिन अलक़, इक़्रा वरब्बुकल अकरमुल्लज़ी अल्लम बिल क़लम, अल्लमल इन्सान मालम यालम

वहां से रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर वापस आए। इस घटना के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हिरा गुफ़ा में ठहरने की हिम्मत नहीं कर पाए। अतः घर लौट आए। अपनी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके पास गए। उस समय आपका दिल कांप रहा था। आपने कहा : ''मुझे चादर उढ़ादो, मुझे चादर उढ़ा दो खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने आप पर चादर

डाल दी। कुछ देर बाद आप की घबराहट कम हुई दिल से डर जाता रहा। आपने खदीजा रजियल्लाहु अन्हासे पूरी घटना बयान की और कहा ''मुझे अपनी जान के तअल्लुक़ से ख़तरा व अन्देशा होने लगा था खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने कहाः ''कदापि नहीं, अल्लाह आपको कभी रुसवा नहीं कर सकता, आप रिष्ते नाते को जोड़ते हैं, लाचारों की मदद करते हैं, ग़रीबों को नवाज़ते हैं, मेहमानों की मेहनवाज़ी करते हैं और मुसीबतों में लोगों के काम आते हैं।

कुछ मुद्दत के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फिर हिरा गुफ़ा पर पहुंचे ताकि आप अपनी इबादत को जारी रख सकें। जब इबादत कर चुके तो मक्का वापस होने के इरादे से गुफ़ा से निकले। जब बीच वादी में पहुंचे तो आपको जिबरईल अलैहिस्सलाम दिखाई दिए। वे आसमान व ज़मीन के बीच कुर्सी पर बैठे हुए थे। इस अवसर पर उन्होंने आप तक यह वहय पहुंचायीः

يَاأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ* قُمْ فَأَنْذِرْ* وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ* وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ* وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ (المدّثر1.5)

या अय्युहल मुद्दस्सिर. कुम फ़अन्ज़िर वरब्बक फ़कब्बिर. व सियाबक फ़तहहिर. वर्रुज ज़ फ़हजुर (सूरह अल मुद्दस्सिर, आयत 1–5)

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब अपनी दावत आरंभ की तो ईमान की दावत को सबसे पहले आपकी योग्य और अक़लमन्द पत्नी खदीजा ने स्वीकार किया। उन्होंने अल्लाह के एक होने का इक़रार किया और अपने

पति की नुबुवत की गवाही दी। उन्होंने सबसे पहले इस्लाम स्वीकार किया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने जिगरी दोस्त अबू बक्र से इस दावत को बयान किया तो वे भी ईमान ले आए और खुलकर तसदीक़ की। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा जान, जिन्होंने आपकी मां और दादा की वफ़ात के बाद आपकी किफ़ालत और लालन पालन की ज़िम्मेदारी संभाली थी, उनके एहसानों की भरपाई करने के मक़सद से उनके बच्चों में से अली रजियल्लाहु अन्हु को पालने के मक़सद से अपने पास ही रखा था, अतएव अली रजियल्लाहु अन्हु ने ईमान के माहौल में आँखें खोलीं और इस दावत को स्वीकार किया। उसके बाद खदीजा के सेवक ज़ैद बिन हारिसा ने इस्लाम स्वीकार किया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम लगातार खुफ़िया तौर पर दावत देते रहे और लोग इस्लाम को पोशीदा रखते रहे। क्योंकि जिसके इस्लाम स्वीकार करने की बात कुरैश को मालूम हो जाती, उसे वे लोग इस्लाम से अलग करने के लिए सख़्त क़िस्म की यातनाएं दिया करते थे

एलानिया दावत

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तीन सालों तक खुफ़िया अन्दाज़ में व्यक्तिगत तौर पर लोगों को दावत देते रहे। इसके बाद अल्लाह ने कुरआन मजीद की यह आयत उतारी

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ﴾ [الحجر:٩٤]

जिस बात का आप को हुक्म दिया जा रहा है उसे खोलकर सुना दिजीए और मुशिरकीन से मुह फेर लिजीए (सूरह अल हिज्र आयत 94)

तो एक दिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ा की पहाड़ी पर मक्का वालों को आवाज़ लगाने के लिए खड़े हुए आपकी बात सुनकर बहुत सारे लोग जमा हो गए जिनमें आपका चचा अबू लहब भी था जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुश्मनी में आगे आगे था। जब आपके पास लोग जमा हो गए तो आपने फ़रमायाः

देखो यदि मैं तुम्हें बताऊं कि इस पहाड़ के पीछे दुशमन घात लगाकर बैठा हुआ है तो क्या तुम मेरी बात की तसदीक़ करोगे?

तमाम लोगों ने कहाः ''हमने आपको हमेशा सच्चा और अमानतदार पाया है। आपने कहाः ''मैं तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से डरा रहा हूं। इसके बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस्लाम की दावत, अल्लाह की इबादत और बुतों की पूजा को छोड़ने की दावत देने लगे। लोगों के बीच से अबू लहब बाहर निकला और कहाः ''तुम बर्बाद हो क्या तुमने हमें इसी वजह से जमा किया है? इस अवसर पर अल्लाह ने एक सूरह उतारी जो क़ियामत तक पढ़ी जाती रहेगी

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ (١) مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ (٢) سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ (٣) وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الحَطَبِ (٤) فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ (المسد)

तब्बत यदा अबी लह बिवं व तब्ब . मा अग़ना अन्हु मा लुहु वमा कसब सयसला नारन ज़ात लह बिवं वमरअतुहू हम्मा लतल हतब . फीजीदिहा हब्लुम्मिम्मसद (सूरह मसद)

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दावत को जारी रखा और आपने लोगों के जमा होने की जगहों पर खुलकर दावत देना शुरु कर दिया। आप काबा के क़रीब नमाज़ पढ़ा करते थे। लोगों की मज्लिसों में आते, मुश्रिकों के बाज़ारों में तशरीफ ले जाते, ताकि उन्हें इस्लाम की दावत दे सकें। आप को काफ़िरों की यातनाओं का बहुत ज़्यादा सामना करना पड़ा, इसी तरह से आप पर जो लोग ईमान लाए थे, काफ़िरों की यातनाएं उन पर बढ़ गयीं। इन्हीं में यासिर, सुमय्या और उनके बेटे अम्मार की यातनाएं भी हैं कि यासिर व सुमय्या यातनाओं की कठोरता की वजह से शहीद हो गए। सुमय्या इस्लाम में सबसे पहली शहीद महिला हैं। इसी तरह बिलाल रजियल्लाहु अन्हु को उमय्या बिन खल्फ़ और अबू जहल के हाथों सख्त तकलीफ़ों से दो चार होना पड़ा। बिलाल रजियल्लाहु अन्हु अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु की कोशिशों से इस्लाम में दाखिल हुए थे जिसका उमय्या बिन खल्फ़ को पता लगा तो उसने यातनाओं और तकलीफों की सारी हदें तोड़ दीं ताकि वे इस्लाम को छोड़ दें लेकिन उन्होंने इस बात से इन्कार कर दिया और अपने दीन पर क़ायम रहे

अतएव उमय्या बेड़ियों में जकड़ कर आपको मक्का के बाहर ले जाता और आपको गर्म रेत पर लिटा कर आपके सीने पर बड़ा भारी पत्थर रख दिया करता था। इसके बाद स्वयं वह और उसके दूसरे आदमी को कोड़ों से मारा करते थे। इस दौरान बिलाल ''अहद अहद अर्थात अल्लाह एक है, अल्लाह एक है कहा करते थे। एक दिन बिलाल रजियल्लाहु अन्हु इसी हाल में थे कि उनके पास से अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ तो उन्होंने बिलाल रजियल्लाहु अन्हु को उमय्या से खरीद लिया और उन्हें अल्लाह की राह में आज़ाद कर दिया

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्हीं मुसीबतों और परेशानियों की वजह से मुसलमानों को इस्लाम खुल कर ज़ाहिर करने से मना किया करते थे और इसी तरह उन्हें खुफिया तौर पर जमा किया करते थे, क्योंकि यदि आप उनको एलानिया तौर पर जमा करते तो शिर्क में मस्त लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी शिक्षा व रहनुमाई के बीच आड़े आ जाते और इससे दोनों गिरोहों के दरमियान जंग छिड़ जाती जो कि मुसलमानों की कम तादाद व बेसरो सामानी की वजह से मुसलमानों के विनाश और बर्बादी का कारण बन जाती अतएव हिकमत का तक़ाज़ा यही था कि दावत को खुफ़िया रखा जाए। जहां तक रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात है तो आप कुरैश के काफ़िरों की यातनाओं और अत्याचारों के बावजूद एलानिया तौर पर दावत और इबादत को मुश्रिकों के सामने अंजाम दिया करते थे।

हबशा की ओर हिजरत

जिन लोगों के इस्लाम का मामला स्पष्ट हो जाता। जो कमज़ोर होते, मुश्रिकीन उन्हें बराबर कष्ट व यातनाएं देते रहते थे। यह देख कर सहाबा किराम ने अपने दीन के साथ हबशा के शाह नजाशी के पास हिजरत कर जाने की इजाजत चाही, इस उम्मीद पर कि उसके पास सुख शान्ति का जीवन गुजार सकेंगे, खास तौर पर तब जबकि बहुत से मुसलमानों को कुरैश से अपनी जान व माल का खतरा पैदा हुआ तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको हिजरत की इजाज़त दे दी। यह नबी बनाए जाने के पांच साल बाद की बात है।

इस अवसर पर लगभग सत्तर मुसलमानों ने अपने घर वालों के साथ हिजरत की जिनमें उसमान रजियल्लाहु अन्हु , उनकी पत्नी रुक़य्या बिन्त मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी थीं। कुरैशियों ने वहां भी अर्थात हबशा में भी उनके रहने सहने को खतरे में डालने की भरपूर कोशिश की। उन्होंने बादशाह की सेवा में तोहफ़े भेजे और उससे मांग की कि इन भगौड़ों को उनके हवाले कर दे और उससे कहा कि मुसलमान ईसा अलैहिस्सलाम और उनकी मां को गालियां देते हैं। जब बादशाह ने मुसलमानों से इस बाबत मालूम किया तो उन्होंने ईसा अलैहिस्सलाम के बारे मे कुरआन जो कहता है उन सारी चीज़ों को पेश कर दिया और हक़ को पूरे तौर पर बयान कर दिया और उसके सामने सूरह मरयम की तिलावत की। अतएव शाह नजाशी ने मुसलमानों को अमान प्रदान की और उन्हें

मुश्रिकों के हवाले करने से इन्कार कर दिया और वह स्वयं ईमान की दौलात से मालामाल हुआ और अपने इस्लाम लाने का एलान कर दिया।

इसी साल रमज़ान के महीने में अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हरम में लोगों के बीच तशरीफ़ ले गए और उनके बीच खड़े होकर सूरह नजम की तिलावत करने लगे। वहां कुरैश के लोगों की एक बड़ी जमाअत मौजूद थी। उन काफ़िरों ने रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से कुरआन न सुनने की अपनी लगातार वसीयत व नसीहत की वजह से इससे पहले कुरआन करीम की तिलावत कभी नहीं सुनी थी, जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस सूरह की उनके सामने तिलावत की और अल्लाह का कलाम उनके कानों से टकराया तो उनमें से हर व्यक्ति इसे ध्यान से सुनने लगा, उस समय उनके दिल में इसके सिवा कोई दूसरा विचार नहीं था। जब अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आयते करीमा **فَاسْجُدُوا لله وَاعْبُدُوا** [النَّجم:٦٢]. (सूरह अन नजम आयत 62) की तिलावत की तो आपने सज्दा किया और फिर ग़ैर इख़्तियारी तौर पर सारे लोग सज्दे में गिर पड़े।

कुरैश के लोग बराबर नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत का विरोध करते रहे और इस सिलसिले में उन्होंने विभिन्न साधनों का इस्तेमाल भी किया। उन्होंने मुसलमानों को यातनाएं दीं, तरह तरह से परेशान किया धमकियां दीं और तरह–तरह का लालच भी

दिया। लेकिन इसके बावजूद मुसलमानों ने दीन के दामन को और अधिक मज़बूती से थामा और इस्लाम लाने वालों की तादाद बढ़ती ही गयी। उन्होंने इस्लाम के विरोध का एक नया तरीक़ा अपनाया और वह यह है कि एक सहीफ़ा लिखा और सारे लोगों ने उस पर दस्तख़त किए और उसे काबे के अन्दर लटका दिया। उन लोगों ने इसमें मुसलमानों और बनू हाशिम से पूरे तौर पर सामाजिक बायकाट करने की सन्धि की। अतएव उनके साथ खरीद व फरोख्त, शादी विवाह, सहयोग और किसी भी तरह का मामला नहीं किया जा सकता था।

इसकी वजह से मुसलमान मक्का से निकल कर एक घाटी ''शेअबे अबू तालिब में जाने पर मजबूर हो गए। वहां मुसलमानों को सख्त मुसीबतों से दो चार होना पड़ा और वे भूख व तंग दस्ती से दो चार हुए। मालदार लोगों ने अपना सारा माल खर्च कर दिया। खदीजा रजियल्लाहु अन्हाने भी अपना पूरा माल खर्च कर दिया और उनके बीच बीमारियां फैल गयीं और उनमें से बहुत से लोग मौत के किनारे पर पहुंच गए, लेकिन वे लोग जमे रहे और सब्र करते रहे और उनमें से एक आदमी भी दीन इस्लाम से अलग नहीं हुआ। यह पाबन्दी तीन सालों तक क़ायम रही यहां तक कि कुछ कुरैशी लोग उठे जिनकी बनू हाशिम से रिष्तेदारियां थी और सहीफे में दर्ज सन्धि को तोड़ दिया और लोगों के बीच इस बात का एलान कर दिया।

जब कुरैश के लोगों ने सहीफ़े को निकाला तो देखा कि दीमक उसे खा गयी थी और ''बिइस्मिक

अल्लाहुम्म के सिवा उसमें कुछ भी बाक़ी नहीं था। इस तरह से मुसलमानों को मुसीबत से नजात मिली और मुसलमान बनू हाशिम मक्का वापस लौट आए लेकिन फिर भी कुरैश के लोग मुसलमानों की दुश्मनी पर बराबर जमे रहे।

शोक भरा साल

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के चचा अबू तालिब के जिस्म के अलग–अलग अंगों में सख्त बीमारी पैदा हो गयी और वे बिस्तर पर पड़ गए। जब वे मौत की सख्तियों को झेल रहे थे और उनके पास बहुत कम समय बचा था, उस समय रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बिस्तर पर सर के पास इस उम्मीद में बैठे थे कि वे मौत से पहले "**लाइलाह इल्लल्लाह** का इक़रार कर लें, लेकिन उनके पास बैठे हुए उनके बुरे साथी जिनमें अबू जहल भी था, ने ऐसा करने से मना किया। वे लोग कह रहे थे कि क्या तुम अपने बाप दादाओं के दीन को छोड़ दोगे? क्या तुम अब्दुल मुत्तलिब के दीन से मुंह मोड़ लोगे? ये लोग बराबर यही बात कहते रहे, यहां तक कि उनका इन्तिक़ाल शिर्क पर हो गया। तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने चचा के तअल्लुक़ से दोहरा ग़म हुआ, क्योंकि वे कुफ्र की हालत में दुनिया से रुख्सत हुए। अबू तालिब की वफ़ात के लगभग दो महीने बाद खदीजा रजियल्लाहु अन्हाइस दुनिया से कूच कर गयीं, जिन का रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम

को बहुत ही ज़्यादा दुख व पीड़ा हुई और आपके चचा अबू तालिब और आपकी पत्नी खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके इन्तिक़ाल के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर आपकी क़ौम की यातनाओं में बहुत ज़्यादा बढ़ौतरी हो गयी।

नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ताइफ़ में

क़ुरैशी बराबर सरकशी ज़ोर आज़माई और मुसलमानों को तकलीफ़ देने पर तैयार रहे तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ताइफ़ जाने के बारे में सोचा, इस उम्मीद से कि शायद अल्लाह तआला उन्हें इस्लाम लाने की हिदायत दे दे। ताइफ़ का सफ़र कोई मामुली बात नहीं थी इस वजह से कि ताइफ़ के ऊंचे.ऊंचे पहाड़ों की गोद में स्थित होने की वजह से रास्ता बड़ा ही कठिन है लेकिन ताइफ़ वालों का नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का स्वागत और आपकी दावत को ठुकरा देना बड़ा ही बुरा था। उन्होंने आपकी बात को नहीं सुना बल्कि आपको भगा दिया और आपके पीछे आवारा बच्चों को लगा दिया। उन बच्चों ने आपको पत्थरों से मारा, यहां तक कि आपकी दोनों ऐड़ियां खून से लत पत हो गयीं। अतएव मक्का की ओर वापसी के इरादे से लौट पड़े। उस समय आप हद दर्जा निराश, दुखी और पीड़ित थे। इस दौरान आपकी सेवा में जिबरईल अलैहिस्सलाम हाजिर हुए। उनके साथ पहाड़ों का फ़रिष्ता भी था।

जिबरईल अलैहिस्सलाम ने आप से कहा कि अल्लाह ने पहाड़ों के फ़रिष्ते को आपकी सेवा में भेजा है ताकि आप

जो चाहें इसे हुक्म दें। पहाड़ों के फ़रिष्ते ने कहाः ''ऐ मुहम्मद! यदि आप चाहें तो मैं इन्हें दोनों पहाड़ों के बीच रख कर पीस दूं। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमायाः ''नहीं, मुझे उम्मीद है कि इनकी नस्ल में से ऐसे लोग पैदा होंगे जो केवल अल्लाह ही की इबादत करेंगे और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करेंगे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के धैर्य और सब्र और अपनी क़ौम की तरफ़ से तकलीफ़ें झेलने के बावजूद उनसे प्यार व मुहब्बत का यह बहुत बड़ा नमूना है

चाँद के दो टुकड़े होने की घटना

मक्का के मुशरिक विभिन्न तरीक़ों से आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बैर व वाद विवाद पर तैयार रहते थे। उनमें से एक यह था कि वे आपकी रिसालत के सबूत के लिए मोजिज़ात की मांग किया करते थे। उन्होंने इस बात की मांग कई बार की। एक बार उन लोगों ने आप से चाँद को दो टुकड़ा करने को कहा। आपने अल्लाह से दुआ की तो अल्लाह ने उनको दिखाने के लिए चाँद के दो टुकड़े करके दिखा दिए। कुरैश ने लम्बे समय तक इस चीज़ का मुशाहेदा किया, लेकिन वे ईमान से सरफ़राज़ नहीं हुए। उन्होंने यह कहना शुरु कर दिया कि मुहम्मद ने हमारे ऊपर जादू कर दिया था। एक व्यक्ति ने कहाः ''यदि उसने तुम लोगों पर जादू कर दिया था तो वह सभी लोगों पर तो जादू कर नहीं सकता है। अतएव सफ़र से आने वालों का इन्तिज़ार करो। जब कुछ सफ़र करने वाले वापस आए और इस घटना के बारे में पूछा गया तो

उन्होंने कहा, कि हां हमने इस चीज़ का मुशाहिदा किया था। इसके बाद भी कुरैश अपने कुफ़्र पर जमे रहे।

इसरा और मेअराज

ताइफ़ से वापसी और वहां यातनाओं और तकलीफ़ों को सहन करने, अबू तालिब की वफ़ात और खदीजा रजियल्लाहु अन्हाके इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दिल पर कई तरह की मुसीबतें जमा हो गयीं तो नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अल्लाह तआला ने दिलासा दिया। एक रात जबकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सोए हुए थे। आपके पास जिबरईल अलैहिस्सलाम बुराक़ जानवर के साथ आए। बुराक़ घोड़े की तरह एक जानवर है जिसके दो बाजू होते हैं और यह बिजली की रफ़तार से दौड़ता है। अतएव जिबरईल अलैहिस्सलाम ने उस पर रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सवार किया और उन्हें लेकर फ़लस्तीन में मौजूद बैतुल मक़्दिस ले गए। फिर वहां से उन्हें लेकर आसमान पर चढ़े। वहां आपने अपने रब की निशानियों में से बहुत सारी चीज़ों को देखा। आसमान ही पर पांच समय की नमाज़ें फ़र्ज़ की गयीं। अल्लाह तआला इर्शाद फ़रमा

﴿سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهِ لَيْلًا مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِي بَارَكْنَا حَوْلَهُ لِنُرِيَهُ مِنْ آيَاتِنَا إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ﴾ [الإسراء:١]

पक है वह जात जिसने अपने बन्दे को रात ही रात में मस्जिदे हराम से मस्जिदे अक्सा की सैर कराई जिसके आस पास को हम बरकत वाला बना रखा है ताकी उसे हम अपनी निशानीयां दिखाएं बेशक वह सुनने और देखने वाला है (सूरह बनी इसराइल आयत 1)

सुबह हुई तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूरी घटना को लोगों से बयान करना शुरु किया जिसकी वजह से काफ़िरों के झुठलाने और उपहास उड़ाने में इज़ाफ़ा हो गया। उसी समय मौजूद लोगों में से किसी ने आपको विवश करने के मक़सद से बैतुल मक़्सिद की विशेषताएं बयान करने को कहा तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके एक एक हिस्से की विशेषता को बयान करना शुरु कर दिया।

मुश्रिकों ने इन सवालों पर ही बस नहीं किया बल्कि उन लोगों ने कहा कि हमें कोई दूसरी दलील चाहिए। आपने फ़रमायाः कि मेरी मुलाक़ात मक्का की तरफ़ आने वाले एक काफ़िले से हुई। आपने आने का समय बताया। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तमाम बातें सच साबित हुईं। मगर काफ़िर अपनी दुश्मनी, बैर और न मानने की वजह से गुमराह हुए। मेअराज ही की सुबह जिबरईल अलैहिस्सलाम नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और आप को पांचों नमाज़ों की कैफ़ियत और उनके समय बताए। इससे पहले नमाज़ दो रकअत सुबह में और दो रकअत शाम में मशरूअ थी।

इस मुद्दत में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दावत को केवल मक्का आने वालों तक सीमित रखा जबकि कुरैश बराबर हक़ से मुंह मोड़ते रहे। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ाफ़िलों से उन की क़यामगाहों में मिलते और उन्हें इस्लाम की दावत देते और उनके लिए इस्लाम की व्याख्या करते। आपका चचा अबू लहब आपके पीछेपीछे जाता और लोगों को आप से और आप की दावत से डराता था। एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वालों की एक जमाअत के पास तशरीफ़ लाए और उन्हें इस्लाम की दावत दी तो उन लोगों ने आपकी बात को बड़े ध्यान से सुना और आपकी पैरवी करने और आप पर ईमान लाने पर सहमति ज़ाहिर की। मदीना वाले यहूदियों से सुना करते थे कि एक नबी के आने का समय क़रीब आ चुका है।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनके सामने दावत पेश की तो वे लोग समझ गए कि यही वह नबी हैं जिसका ज़िक्र यहूदी किया करते थे अतएव उन्होंने इस्लाम कुबूल करने में जल्दी की और कहा कि इस मामले में यहूदी तुम से आगे न बढ़ जाएं। ये 6 लोग थे। दूसरे साल मदीना के बारह लोग तशरीफ़ लाए। वे लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हुए तो आपने उनको दीन इस्लाम की बातें सिखायीं और जब वे मदीना वापस जाने लगे तो उनके साथ मुसअब बिन उमैर रजियल्लाहु अन्हु को कुरआन की शिक्षा और दीनी अहकाम सिखाने के लिए भेजा। अल्लाह की कृपा से इब्ने उमैर रजियल्लाहु अन्हु ने मदीना के समाज पर

अच्छा असर छोड़ा। एक साल बाद जब मक्का वापस हुए तो उनके साथ मदीना के 72 मर्द और 2 औरतें थीं। वे लोग नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जमा हुए और आपके हाथ पर दीन की मदद और उसके कामों को अंजाम देने पर बैअत की और इसके बाद मदीना वापस लौटे

दावत का नया मर्कज़

मदीना हक़ और हक़ वालों के लिए एक महफ़ूज़ पनाहगाह बन गया। अतएव उसकी तरफ़ मुसलमानों की हिजरत का सिलसिला शुरु हो गया, अलबत्ता क़ुरैशियों ने मुसलमानों को हिजरत से रोकने का इरादा पक्का कर लिया। इसकी वजह से कुछ मुहाजिरों को बड़े कठिन हालात व ज़ुल्म व अत्याचार का सामना करना पड़ा। यही वजह है कि मुसलमान क़ुरैश से छुप कर हिजरत किया करते थे। अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु भी हिजरत की इजाज़त मांगा करते थे मगर अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनसे कहतेः "जल्दी न मचाओ, शायद अल्लाह तुम्हारा कोई साथी बना दे। यहां तक कि बहुत से मुसलमान हिजरत कर गए।

क़ुरैश ने मुसलमानों की हिजरत और मदीना में जमा होने को देखा तो उनका पागल पन हद से ज़्यादा बढ़ गया और उन्हें मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी दावत के ग़ालिब होने का डर सताने लगा। अतः उन्होंने इस बारे में आपस में सलाह व मश्वरा किया और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को क़त्ल करने पर सहमत हो गए। अबू जहल ने कहाः "मेरा विचार है कि हम

अपने–अपने खानदान में से एक एक ताक़तवर नवजवान को तलवार थमाएं। वे लोग मिल कर मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को घेरें और एक साथ टूट पड़ें, इस तरह से उनका खून पूरे क़बाइल में तक़सीम हो जाएगा और बनू बनु हाशिम सभी लोगों से दुश्मनी की हिम्मत नहीं कर पाएंगे। इधर अल्लाह तआला ने अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इस साजिश से आगाह कर दिया तो अल्लाह से इजाज़त मिलने के बाद अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु से हिजरत के बारे में मश्वरा किया और रात में अली रजियल्लाहु अन्हु से कहा कि वे आप की जगह सो जाएं ताकि लोगों को एहसास हो कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर ही में हैं।

साज़िशी लोग आए और उन्होंने घर को चारों ओर से घेर लिया। उन्होंने अली रजियल्लाहु अन्हु को बिस्तर पर देखा तो समझा कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं अतएव वे लोग आपके निकलने का इन्तिज़ार करने लगे ताकि वे घात लगा कर हमला करें और आपको क़त्ल कर दें। इस दौरान रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके बीच से निकले। वे लोग घर को चारों ओर से घेरे हुए थे आपने उनके सरों पर मिट्टी डाली जिससे अल्लाह ने उनकी आँखों की रौशनी खत्म कर दी और उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाहर निकलने का पता ही न लग सका। आप अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु के पास गए और दोनों एक साथ मदीना की तरफ़ निकल पड़े और ग़ारे सौर में छुप गए।

कुरैश के नवजवान आपका इन्तिज़ार करते रहे यहां तक कि सुबह हो गयी। सुबह हुई तो अली रजियल्लाहु अन्हु आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बिस्तर से उठे तो वह अपने हाथ मलते रह गए। उन्होंने अली रजियल्लाहु अन्हु से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में मालूम किया लेकिन उन्होंने आपके बारे में कुछ नहीं बताया जिस पर उन लोगों ने आपको मारा पीटा मगर इससे कुछ हासिल नहीं हुआ। इसके बाद कुरैश ने आपकी तलाश में हर ओर लोगों को भेजा और ज़िन्दा या मुर्दा मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लाने वाले के लिए सौ ऊंटों का इनाम रखा। तलाश करने वाले ग़ार के मुंह तक पहुंच गए जिस में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपके साथी अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु छुपे हुए थे यहां तक कि यदि उनमें से कोई अपने पांव के नीचे देखता तो वह आप दोनों को देख लेता, जिसे देख कर अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के लिए अत्यन्त दुखी हो गए। इस पर अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनसे कहाः ''अबु बक्र इन दो लागों के बारे में तुम क्यों परेशान हो रहे हो जिनके साथ तीसरा अल्लाह है। ग़म न करो अल्लाह हमारे साथ है

कुरैश के लोगों ने आप दोनों को नहीं देखा। नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आप के दोस्त ग़ार में तीन दिन तक ठहरे, फिर मदीना के लिए चल दिए। रास्ता बहुत लम्बा था और धूप बहुत तेज़ थी। दूसरे दिन की शाम में आप दोनों का गुज़र उम्मे माअबद नामी एक

महिला के खेमे से हुआ। आप दोनों ने उनसे खाना पानी मांगा, लेकिन इन्हें उनके पास कुछ नहीं मिला, अलबत्ता एक कमज़ोर बकरी थी जो चलने की तकलीफ़ की वजह से चरागाह नहीं जा सकी थी। उसके थनों में दूध की एक बूंद का भी नामो निशान नहीं था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बकरी के पास गए और उसके थन पर हाथ फेरा अतएव दूध का फ़व्वारा बहने लगा। आपने उस बकरी को दुहा और एक बड़ा बर्तन भरा। यह देखकर उम्मे माअबद हैरान व परेशान हो गयीं। आप दोनों ने उसे पिया यहां तक कि पेट भर गया। फिर दूसरी बार बकरी को दुहा और बर्तन भर जाने के बाद उसे उम्मे माअबद के पास छोड़ दिया और अपना सफ़र जारी रखा।

उधर मदीना वाले रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पहुंचने का मदीना से बाहर निकल कर रोज़ाना इन्तिज़ार करते थे जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना पहुंच गए तो वह लोग आपके पास आए और आपको खुश आमदीद कहा। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना के क़रीब कुबा नाम की जगह पर क़याम किया और चार दिन तक ठहरे इसी मुद्दत में आपने एक मस्जिद की बुनियाद डाली। वह मस्जिद कुबा इस्लाम में तामीर की जाने वाली सबसे पहली मस्जिद है। पांचवें दिन आप मदीना की ओर चल पड़े। बहुत सारे अन्सारी सहाबा की इच्छा थी कि वे रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दावत से सरफ़राज़ हों और उन्हें आपकी मेहमान नवाज़ी का गौरव प्राप्त हो। अतएव वे ऊंटनी की लगाम पकड़ लेते थे जिस पर आप

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनका याक्रिया अदा करते और कहतेः ''इसे छोड़ दो क्योंकि यह अल्लाह की ओर से काम पर है। ऊंटनी जब उस मक़ाम पर पहुंची जहां अल्लाह ने उसे ठहरने का हुक्म दिया था तो वह बैठ गयी। आप उससे नहीं उतरे, ऊंटनी उठी और कुछ दूर फिर चली, फिर मुड़ी और वापस आ गयी और पहली जगह रुक गयी तो अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इस बार ऊंटनी से उतर गए। यही मस्जिदे नबवी की जगह थी और अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अबू अय्यूब अन्सारी रजियल्लाहु अन्हु के यहां क़याम किया।

अली रजियल्लाहु अन्हु नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बाद मक्का में तीन दिन तक ठहरे इस दौरान नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास रखी हुई अमानतों को उनके मालिकों को वापस कर दिया और फिर मदीना के लिए रवाना हो गए और आपको कुबा में पा लिया

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना में

जहां रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ऊंटनी बैठी थी उस जगह को उसके मालिकों से खरीदने के बाद आपने मस्जिद की तामीर वहीं की और मुहाजिरीन जो कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ मक्का से तशरीफ़ लाए थे और अन्सार अर्थात मदीना वालों में से जिन लोगों ने मुहाजिरों की मदद की, इनके बीच भाइचारा कराया इस तौर कि हर अन्सारी सहाबी का मुहाजिरों में से एक को भाई बना दिया जो उसके माल में शरीक हो। इसके बाद

अन्सार व मुहाजिरीन एक साथ काम करने लगे और उनके बीच भाई चारगी का रिश्ता मज़बूत हो गया।

कुरैश के मदीना के यहूदियों से दोस्ताना संबंध थे। यही वजह है कि यहूदी भी अपने तौर पर मुसलमानों के बीच बेचैनी और मतभेदों के बीज बोना चाहते थे दूसरी तरफ़ कुरैश के लोग मुसलमानों को खत्म करने की धमकी दिया करते थे। अतएव मुसलमानों को आन्तरिक व बाहरी हर ओर से खतरा था, मामला इतना संगीन हो गया था कि सहाबा किराम रातों में हथियार लेकर सोया करते थे। इस तरह के खतरनाक हालात में अल्लाह तआला ने जिहाद की इजाज़त दी जिसके बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुश्मन की चलत फिरत पर निगाह रखते, मुश्रिकों को मुसलमानों की ताक़त का एहसास दिलाने और उनके दिलों में डर बैठाने के उद्देश्य से तिजारती क़ाफ़िलों को पकड़ने की खातिर इस्लामी सेना की टुकड़ियों को तर्तीब देने लगे ताकि वे लोग सुलह कर लें और इन्हें इस्लाम फैलाने और उस पर अमल के लिए आज़ाद छोड़ दें। इसी उद्देश्य से नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कुछ क़बीलों के साथ आपसी सहयोग की सन्धि भी की।

बदर की जंग

एक बार रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाम से लौट रहे तिजारती क़ाफ़िलों को पकड़ने का इरादा किया। इस उद्देश्य के तहत आप 313 लोगों के साथ

निकल पड़े। आपके साथ केवल दो घोड़े और सत्तर ऊंट थे जबकि कुरैश के काफ़िले में एक हजार ऊंट थे जिसकी क़ियादत अबू सुफ़ियान कर रहा था और उसके साथ चालीस लोग थे। अबू सुफ़ियान को मुसलमानों के निकलने का आभास हो गया तो उसने एक क़ासिद मक्का भेजा ताकि वह उन्हें पूरी घटना की खबर पहुंचा दे और उन से मदद तलब करे। इधर अबू सुफ़ियान ने अपना रास्ता बदल दिया और दूसरी राह पर चल पड़ा, जिसकी वजह से मुसलमानों को वह क़ाफ़िला न मिल सका। दूसरी ओर कुरैश एक बड़े लशकर के साथ निकले जिनमें एक हजार जंगजू थे। इस दौरान उनके पास अबू सुफ़ियान के पास से क़ासिद पहुंचा और उसने क़ाफ़िले के सही और सुरक्षित बच जाने की सूचना दी और उन्हें मक्का वापस जाने को कहा। लेकिन अबू जहल ने वापसी से इन्कार कर दिया और लशकर ने अपना सफ़र जारी रखा।

जब रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कुरैश के निकलने की खबर पहुंची तो आपने सहाबा से मशवरा किया। तमाम लोगों ने काफ़िरों और उनके सैनिकों का सामना करने की राय दी। 17 रमज़ानुल मुबारक सन 2 हिजरी की सुबह दोनों पक्षों की मुठ भेड़ हुई और दोनों के बीच खतरनाक और घमासान जंग हुई और मुसलमानों की जीत के साथ जंग का खात्मा हुआ। 14 मुसलमान शहीद हुए जबकि मुश्रिकों में से सत्तर मारे गए और इतने ही लोग गिरफ़तार भी हुए। जंग के दौरान ही रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी और उसमान रजियल्लाहु अन्हु की जीवन साथी रुक़य्या का इन्तक़ाल

हो गया जिनके साथ उनके पति मदीना में ठहरे हुए थे और इस जंग में शरीक नहीं हो सके थे क्योंकि रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें अपनी बीमार पत्नी के पास रहने का हुक्म दिया था। जंग के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसमान रजियल्लाहु अन्हु से अपनी दूसरी बेटी उम्मे कुलसूम की शादी कर दी, इसी वजह से उसमान रजियल्लाहु अन्हु को जुन्नूरैन कहा जाता है। क्योंकि उनके निकाह में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दो बेटियां आयीं।

जंगे बदर के बाद मुसलमान अल्लाह की मदद से खुश होकर मदीना वापस हो गए। उनके साथ क़ैदी और ग़नीमत का माल भी था। क़ैदियों में से कुछ ने अपनी जान का फ़िदया दिया और कुछ लोगों को बिना फ़िदया के छोड़ दिया गया और कुछ लोगों का फिदया यह था कि वे दस मुसलमान बच्चों को पढ़ना और लिखना सिखाएं।

उहुद की जंग

बदर की जंग के एक साल बाद यह जंग मुसलमानों और काफ़िरों के बीच पेश आयी। मुश्रिकों ने बदर की जंग में पराजित होने के बाद मुसलमानों से बदला लेने का इरादा किया। अतएव वे लोग तीन हज़ार सैनिकों के साथ निकल पड़े। मुसलमानों ने उनका सामना लगभग सात सौ आदमियों से किया। शुरु में मुसलमान विजयी रहे और काफ़िरों पर ग़ालिब रहे और मुश्रिकीन मक्का की तरफ़ भाग

खड़े हुए लेकिन मुश्रिकीन दूसरी बार लौटे और पहाड़ की तरफ़ से मुसलमानों पर टूट पड़े जिधर से वे तीर अन्दाज़ अपनी जगह से हट गए थे जिस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनको नियुक्त किया था और माले ग़नीमत जमा करने के उद्देष्य से पहाड़ के ऊपर से उतर गए थे तो इस जंग में मुश्रिकों का पलड़ा भारी रहा

ग़ज़वए खन्दक़

जंगे उहूद के बाद कुछ यहूदी मक्का वालों के पास गए और उनको मदीना में मुसलमानों से लड़ने पर उभारा, इसी के साथ उन्होंने मदद करने व पूरे समर्थन का वायदा किया तो मुश्रिकों ने उनकी बात मान ली। इसके बाद यहूदियों ने दूसरे क़बीलों को भी मुसलमानों के साथ जंग पर आमादा किया तो उन्होंने भी इस तरह से उनकी बात मान ली। अतएव मुश्रिकीन हर जगह से मदीना के आस पास जमा होने लगे यहां तक कि मदीना के गिर्द दस हज़ार जंगजू जमा हो गए। नबीए अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुश्मनों की चलत फिरत का पता था, इस वजह से आपने इस मामले में सहाबा किराम से मश्वरा किया तो सलमान फ़ारसी रजियल्लाहु अन्हु ने आपको मश्वरा दिया कि मदीना के जिस ओर पहाड़ नहीं हैं उधर खन्दक़ खोदी जाए। मुसलमानों ने खन्दक़ खोदने में हिस्सा लिया अतएव जल्द ही खन्दक़ खोद ली गयी और दूसरी ओर मुश्रिकीन मदीना के बाहर लगभग एक महीना कैम्प लगाए रहे। वे खन्दक़ में घुसने की हिम्मत न कर सके। इसके बाद अल्लाह ने सख्त आंधी भेजी जिस

से उनके खेमे उखड़ गए। उस दिन से उनके दिलों में भय बैठ गया और जल्द ही अपने घरों को भाग खड़े हुए। अल्लाह ने अकेले ही तमाम जमाअतों को पराजय से दोचार किया और मुसलमानों को विजयी किया।

फतहे मक्का

सन 8 हिजरी में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का पर चढ़ाई की और इसे फ़तह करने का फ़ैसला किया। आप दस हजार फ़ौज के साथ 10 रमजानुल मुबारक को निकले और बिना जंग व लड़ाई के मक्का में दाखिल हो गए। जहां कुरैश ने हथियार डाल दिए और अल्लाह ने मुसलमानों को फ़तह से नवाज़ा। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मस्जिदे हराम की तरफ गए, खाना काबा का तवाफ़ किया और उसके अन्दर दो रकअतें अदा कीं। इसके बाद काबा के अन्दर और उसके ऊपर मौजूद तमाम बुतों को तोड़ डाला। इसके बाद काबा के दरवाज़े पर खड़े हुए। उस समय नीचे कुरैश के लोग खड़े इस बात का इन्तिज़ार कर रहे थे कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनके साथ क्या मामला करते हैं।

इस मौक़े पर रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः ''ऐ कुरैश की जमाअत! तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम लोगों के साथ क्या करुंगा? उन लोगों ने कहाः ''भलाई की उम्मीद है कि आप बहुत ही शरीफ़ हैं और शरीफ व्यक्ति के बेटे हैं। आपने फ़रमायाः ''जाओ तुम सब आज़ाद हो। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि

वसल्लम ने उन दुश्मनों की माफ़ी के मामले में एक बेहतरीन नमूना क़ायम किया जिन्होंने आप के सहाबा किराम रजियल्लाहु अन्हुम को सताया और उन्हें तरह तरह की यातनाएं दीं और देश से निकाल दिया।

मक्का की फ़तह के बाद लोग गिरोह के गिरोह दीने इस्लाम में दाखिल होने लगे। सन 10 हिजरी में रसूल अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज किया। आपने अपनी ज़िन्दगी में यही एक हज किया। आप के साथ एक लाख से अधिक लोगों ने हज का फ़रीजा अदा किया। हज की अदाएगी के बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मदीना वापस लौट गए।

वफूद की आमद और बादशाहों के नाम खुतूत

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीन इस्लाम ग़लबा पा गया और आपकी दावत फैल गयी, अतएव हर तरफ से वफूद का आना और उनका इस्लाम में दाखिले के एलान का सिलसिला शुरु हो गया।

इसी तरह रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस्लाम की तरफ दावत देने के मक़सद से बादशाहों, क़बीलों के अमीरों और हाकिमों के नाम खुतूत भेजे। कुछ लोगों ने आपकी दावत स्वीकार की और आप पर ईमान लाए और कुछ ने बेहतर अन्दाज़ से जवाब दिया और आपकी सेवा में उपहार भेजे। अलबत्ता वे इस्लाम में दाखिल नहीं हुए और कुछ ऐसे भी थे जो गुस्सा हो गए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पत्र को फाड़ दिया, जैसा कि शाहे फ़ारस ने किया। उसने आपके खत

को फाड़ दिया तो रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उसके लिए बद दुआ की और कहाः ''अल्लाह उसकी हुकूमत को टुकड़े टुकड़े कर दे। अतएव कुछ ही दिनों बाद उसके बेटे ने उसके खिलाफ़ बग़ावत करके उससे बादशाहत छीन ली।

शाहे मिस्र मक़ोक़स ने इस्लाम तो स्वीकार नहीं किया, अलबत्ता उसने नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़ासिद का सम्मान किया और उनके हाथ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तोहफ़े भेजे। क़ैसर रूम ने भी इसी तरह से क्यिा। उसने भले तरीक़े से जवाब दिया और नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का सम्मान किया और आपके लिए हदया भेजा।

बहरैन के शासक मुन्ज़र बिन सावी के पास नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का खत पहुंचा तो उसने अपने पास मौजूद लोगों के सामने उसे पढ़ा, अतएव कुछ लोग ईमान लाए और कुछ लोगों ने इन्कार किया।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात

रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के हज से वापसी के ढाई महीने बाद आप की बीमारी का सिलसिला शुरु हुआ और दिन प्रति दिन रोग में बढ़ौतरी होती चली गयी। जब आप लोगों को नमाज़ पढ़ाने की ताक़त न रख सके तो अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु से लोगों की इमामत करने को कहा।

पीर के दिन 12 रबीउल अव्वल सन 11 हिजरी में रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रफ़ीक़े आला से जा मिले। आपने 63 साल की उम्र पायी। जब इसकी खबर सहाबा किराम को मिली तो ऐसा लगता था कि वे होश व हवास और अपनी अक़्ल खो बैठेंगे और उन लोगों को आपकी वफ़ात का विश्वास ही नहीं हुआ यहां तक कि अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु ने उनको शान्त करने के उद्देश्य से खुतबा दिया और बताया कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्सान हैं और दूसरे लोगों की तरह उनको भी मौत से दोचार होना पड़ेगा। इसके बाद लोग शान्त हुए। आपकी पत्नी आयशा रजियल्लाहु अन्हाके कमरे में नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुस्ल और कफन दफ़न का काम अंजाम दिया गया।

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मक्का में नुबुवत से पहले चालीस साल और नुबुवत के बाद 13 साल और मदीना मुनव्वरा में नुबुवत के बाद 10 साल क़याम किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वफ़ात के बाद मुसलमानों ने आम सहमति से अबू बक्र ;रज़ियल्लाहु अन्हु को मुसलमानों का खलीफ़ा चुन लिया। अतएव वह पहले खलीफ़ा राशिद थे।

मुहम्मद अंतिम नबी
सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम